

व्याकरण पारिभाषिक शब्दावली –३

घि-

‘शेषो घ्यसखि’ अनदीसंज्ञौ ह्रस्वौ याविदुतौ तदन्तं सखिवर्जं घि संज्ञं स्यात्। नदी संज्ञा को छोड़कर ह्रस्व जो इकारान्त उकारान्त शब्द हैं उनकी घि संज्ञा होती है। जैसे हरि, रवि, भानु, विष्णु आदि शब्दों की घि संज्ञा होती है।

आत्मनेपद-

‘तडानावात्मने पदम्’ तङ् प्रत्याहारः शानच्कानचौ चैतत्संज्ञा स्युः। अर्थात् तङ् प्रत्याहार (त, अताम्, झ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इङ्, वहि, महिङ्) शानच् और कानच् प्रत्ययों की आत्मनेपद संज्ञा होती है।

परस्मैपद-

‘लः परस्मैपदम्’ लादेशाः परस्मैपदसंज्ञा स्युः। अर्थात् ल् के स्थान पर होने वाले (तिप्, तस्, झि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्) इन नौ प्रत्ययों की परस्मैपद संज्ञा होती है।

नदी-

‘यूस्त्राख्यौ नदी’ ईदूदन्तौ नित्यस्त्रीलिङ्गौ नदी संज्ञौ स्तः। ईकारान्त और ऊकारान्त नित्य स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है। जिन शब्दों का प्रयोग केवल स्त्रीलिङ्ग में होता है अन्य लिङ्ग में नहीं उन्हें नित्यस्त्रीलिङ्ग शब्द कहते हैं ऐसे नित्यस्त्रीलिङ्ग ईकारान्त और ऊकारान्त हों तो उनकी नदी संज्ञा होती है। जैसे- वधू, गौरी, नदी आदि शब्द नित्यस्त्रीलिङ्ग हैं इसलिए इनकी नदी संज्ञा होती है।

उपसर्जन-

‘प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्’ समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात्। अर्थात् समासविधायक शास्त्र अर्थात् सूत्र में प्रथमान्त पद से जिसका निर्देश हो उदाहरण में उसकी उपसर्जन संज्ञा होती है। जैसे- अधिहरि इस प्रयोग में ‘अव्ययं विभक्ति०’ सूत्र से समास होता है। इस सूत्र में प्रथमान्त पद से अव्यय कहा गया है इसलिए उदाहरण में अव्यय पद से अधि का ग्रहण होता है और उसकी उपसर्जन संज्ञा हो जाती है और उसका पूर्व प्रयोग होकर अधिहरि पद बनता है।

उपपद-

‘तत्रोपपदं सप्तमीस्थम्’ सप्तम्यन्ते पदे ‘कर्मणि-’ इत्यादौ वाच्यत्वेन स्थितं कुम्भादि तद्वाचकं पदमुपपदसंज्ञं स्यात्। अर्थात् सप्तमी विभक्ति हो जिसके अन्त में ऐसे पद का प्रयोग करने वाले ‘कर्मण्यण्’ आदि शास्त्र से उदाहरण में बोधित जो पद उसकी उपपद संज्ञा होती है। जैसे कुम्भं करोतीति कुम्भकारः इसमें कुम्भ की उपपद संज्ञा होती है तब कृ धातु से कर्मण्यण् से अण् प्रत्यय होकर कुम्भकार बनता है।

निष्ठा-

‘क्तवतू निष्ठा’ एतौ निष्ठा संज्ञौ स्तः। क्त प्रत्यय और क्तवतु प्रत्यय की निष्ठा संज्ञा होती है। जैसे स्तुतः, स्तुतवान्

अपृक्त-

‘अपृक्त एकाल् प्रत्ययः’ एकाल् प्रत्ययो यः सोऽपृक्त संज्ञः स्यात्। अर्थात् एकाल् एक अल् = वर्ण वाले प्रत्यय की अपृक्त संज्ञा होती है। जैसे सु का स्, तिप् का त् ये अपृक्तसंज्ञक होते हैं।

सर्वनामस्थान-

(क) ‘सुडनपुंसकस्य’ स्वादि पञ्चवचनानि सर्वनामस्थान-संज्ञानि स्युरक्लीबस्य। नपुंसकलिङ्ग के शब्दों को छोड़कर अन्य लिङ्ग के शब्दों के बाद आने वाले सु, औ, जस्, अम्, औट्, शस् इन पाँचों प्रत्ययों की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

(ख) ‘शि सर्वनामस्थानम्’ नपुंसक लिङ्ग के शब्दों के जस् और शस् के स्थान पर ‘जश्शसोः शि’ होने वाले शि की भी सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

.....